धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

जुलाई – अगस्त 2009

पूजनीय भगवान की व्याकुलता

साथी सेवकों का कल्याणकारी सम्बन्ध

श्रीमान भाई अमर सिंह जी

श्रीमती धर्म प्यारी जी

शुभ संग्राम

पूजनीय भगवान की व्याकुलता

सोलन पर्वत आश्रम पर जैसे जनवरी के महीने में पाले के मारे सैकड़ों वृक्ष टुंड-मूंड विहीन दिखाई देते हैं, वैसे ही देवसमाज के कई जन जिनमें मेरे साथ पहले किसी अनुकूल संबंध सूत्र के स्थापन होने से सात्विक जीवन विषयक किसी-किसी भाव की कुछ कोपलें निकली थीं और जिनमें समाज के किसी विभाग में अपनी किसी एक या दूसरी वासना को त्याग करके सेवाकारी बनने के लिए कुछ आकांक्षा जागी थी और वह ऐसी आकांक्षा से परिचालित होकर कई-कई वर्ष तक खुशी-खुशी सेवाकारी भी बनते थे, वह अपने हार्दिक संबंध के विचार से मुझसे कटकर और मेरे संबंध में धीरे-धीरे एक ओर धर्म साधन विहीन और दूसरी ओर प्रतिकूल घटनाओं से घिर कर अपनी दबी हुई किन्तु प्रबल वासनाओं से परास्त होकर और अपने उच्च भावों को खोकर उपरोक्त वृक्षों की न्याई टुंड-मुंड दिखाई देते हैं। सोलन के पाले से मारे हुए वृक्षों में से अधिकांश वृक्ष बसंत ऋतु के आने पर फिर हरे-हरे, कोमल-कोमल पत्ते निकाल कर और कितने फूलों और फलों से लदकर सुन्दर दिखाई देते हैं, परन्तु शोक उपरोक्त अधोगति प्राप्त आत्माओं में कितनों के लिए फिर कभी अनुकूल वसंत ऋतु के आगमन और उनमें फिर कभी नए सिरे से उच्च भाव विषयक फल और फूल निकालने की कोई संभावना तक प्रतीत नहीं देते हैं।

ऐ महाविशाल नेचर! ये सत्य है कि तू है और यह भी सत्य है कि तेरे सिवाय और कुछ भी नहीं और कहीं भी नहीं। यह सत्य है कि एक तेरे ही अस्तित्व से सब प्रकार के सच्चे अस्तित्व चाहे अजीवित हों चाहे जीवित, प्रगट होते हैं, वह तुझी में और तेरी ही शक्तियों और तेरे ही नियमों के द्वारा स्थिर रहते हैं और अपनी हालत में बदलते रहते हैं और बदल कर अपने व्यक्तिगत अस्तित्वों के विचार या तो तुझमें ही विलीन होकर नष्ट हो जाते हैं या तुझमें ही स्थिर रहकर उच्च बनते और विकसित होते हैं। मैं तेरे इस सत्य रूप को सम्मुख लाकर साफ देखता हूँ कि तेरे भीतर से लाखों और करोड़ों अस्तित्व मिटते जा रहे हैं। आज वह जिस रूप में नज़र आ रहे हैं, उसमें वह बराबर नीचे को जा रहे हैं, उनका रूप बिगड़ रहा है, उनके गुण बिगड़ रहे हैं, वह पतित हो रहे हैं और क्या अपनी शक्ल और अपने गुणों के विचार से अपने अस्तित्व को खो रहे हैं वह समय निकट आ रहा है जबकि वह पतित होते-होते अपने सारे अस्तित्व को खो देंगे। हां, पिछले बहुत बड़े समय में लाखों करोड़ों अस्तित्व अपने आप को नष्ट कर चुके हैं।

इसके साथ ही मैं तेरी सत्ता में यह भी देखता हूँ कि कुछ ऐसे अस्तित्व भी हैं जो समय के साथ उच्च या श्रेष्ट बनते या बन रहे हैं। उनका आकार श्रेष्ट बन रहा है, उनमें अच्छे गुणों को उत्पत्ति हो रही है, उनका प्रभाव औरों पर अच्छा पड़ रहा है और उनके प्रभावों से औरों में भी बेहतरी

शेष पेज़ 6 पर

धर्म जीवन

खण्ड 21 अंक 7 – 8

जुलाई – अगस्त 2009

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

साथी सेवकों का कल्याणकारी सम्बन्ध

हित और सत्य स्वरूप परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के और भी बहुत से उपकार हैं, लेकिन उन्होंने घोर संग्राम और त्याग करके इस पृथ्वी में जो सेवक दल उत्पन्न किया है, वह उनका मनुष्य मात्र पर महा उपकार है। भगवान देवात्मा ने इस नारकीय दुनिया में अपना खूने जिगर से सेंच-सेंच कर यह सेवक दल एक ऐसा रूहानी बाग़ तैयार किया है, कि जिन की नाना अंगों के विचार से अकथनीय विशेषता है। इस की शोभा, इसकी महक वा खुशबू, इसके फल और इस की बरकतें इतनी अधिक इस कदर विशेष और आश्चर्य जनक हैं, कि जिन की महिमा शब्दों द्वारा वर्णन नहीं की जा सकती। हम में से प्राय: सबको ही अपने एक वा दूसरे साथी सेवक के द्वारा ही सेवक दल में शामिल होने अथवा अपने गुरु भगवान् देवात्मा की शरण में आने वा उनका सेवक बनने का महा सौभाग्य प्राप्त हुआ है। और इस रूहानी बाग के यकता माली और हमारे मूल सम्बन्धी भगवान देवात्मा से दूसरे दर्जे पर हमारी आत्मिक रक्षा, पालना और उन्नति का काम हमारे साथी सेवकों के द्वारा होता है। हम में से एक-एक जन जब कभी भीतर और बाहर हानिकारक प्रभावों को पाकर अपने आत्म हित की ओर से अन्धा और बेसुध हो गया है, और खुद अपने हाथों से अपनी और अपने सम्बन्धियों की कबरें खोदने में लग गया है, तब ऐसी मृत्यु की महा भयानक गति से बचाने का काम भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों को पहुँचाकर हमारे एक या दूसरे साथी सेवक ने ही किया है। एक-एक साथी सेवक ने हमें पत्र लिखकर वा खुद हमारे पास पहुंच कर वा किसी को भेजकर हमारी रक्षा और सहायता की है। हमें गहरी बेहोशी की हालत से निकाला है, और धर्म मार्ग पर चलने के योग्य किया है।

इस के भिन्न कसरत से हमारे साथी सेवकों के नाना अंगों में अनुकरण के योग्य दृष्टान्त, हमारे मुर्दा दिलों में नई रूह फूंकने का काम करते हैं। उन के अपने और दूसरों के आत्मिक कल्याण के निमित्त नाना प्रकार के त्यागों और समर्पणों के दृष्टान्त, उनके नाना अंगों में हानि और हित परिशोध के दृष्टान्त, धर्म के अति कठिन मार्ग में सब नाना सुखों के छोड़ने और बड़े-बड़े दुखों और

कष्टों को खुशी - खुशी सिर पर लेने और अपने गुरु और समाज के सम्बन्ध में वफादार रहने के दृष्टान्त, किसी विरोधिता के समय उसे पूरे जोश और बहादुरी से कुचलने और साबत कदम रहने के दृष्टान्त, कई अंगों में श्रेष्ट और सेवाकारी जीवन रखकर भी दीन और नम्र बने रहने और अपने परम गुरु को ही बढ़िया प्रगट करने वा मुख्य रखने के दृष्टान्त, हां दूसरों से अपमान वा दुख पाकर भी उन्हीं का भला चाहने और करने आदि के इतने सुन्दर, आकर्षणीय और कल्याणकारी दृष्टान्त हैं, जो गिरे हुए और निराशा से भरे हुओं को खड़ा करने और आशा और उत्साह से भरने का हेतु बनते हैं। और कई एक हमारे साथी सेवक हमारी अपनी अनेक उलझने हमारी एक वा दूसरी दिक्कत, मुसीबत वा बीमारी में एक - एक बार हमारे खूनी रिश्तेदारों से भी बढ़कर सहायक वा सेवाकारी प्रमाणित हुए हैं। सचमुच हमारे जीवन दाता और परम हितकर्ता भगवान देवात्मा ने हमारे लिए नाना अंगों में रक्षक, सहायक, सच्चा हमदर्द और बहुत बड़ा सेवाकारी हां, आत्मिक विचार से जीवन दायक वा अति कल्याणकारी दल पैदा किया है। इसके सुन्दर और सेवाकारी रूप को सन्मुख लाकर पूजनीय भगवान और सेवक दल को जितना भी धन्यवाद दें, और धन्य - धन्य कहें, उतना ही थोड़ा है।

यह अति कल्याणकारी सेवक दल किस कदर निराली और महा हितकर मण्डली भगवान देवात्मा ने पैदा की है, और उनके देव प्रभावों को पाते रहकर यह निराली मण्डली धीरे - धीरे इस दुनिया में क्या - क्या बेहद बरकतें लाने की हेतु होगी, इसके विषय में एक सेवक लिखते हैं :-

"सारी दुनिया में एक यही दल ऐसा है, कि जो हर प्रकार के नशों के सेवन से बचा हुआ है, जो मांसाहार का त्यागी है। जिस दल में कोई जूआ नहीं खेलता, कोई जन व्यभिचार नहीं करता, कोई चोरी नहीं करता कोई जन रिश्वत नहीं लेता, कोई जन किसी का कर्ज़ा या अमानत आदि नहीं मारता, कोई जन बिना उचित कारण के किसी पशु या मनुष्य को वध नहीं करता आदि - आदि।

यही एक ऐसा दल है, कि जिस में यदि कोई जन उपरोक्त आठ पापों में से किसी पाप को फिर करने वाला प्रमाणित हो, तो उसे तत्काल सेवकी से स्थगित या खारज़ कर दिया जाता है, और फिर वह जब तक उचित दण्ड लेकर बहाल होने के योग्य न हो, तब तक उसे बहाल नहीं किया जाता यही सेवक दल ऐसा है, जो एक ओर किसी मिथ्या उपास्य की पूजा नहीं करता, और दूसरी ओर एक मात्र सत्य उपास्य देव भगवान देवात्मा को अपना माबूद वा उपास्य मानता है। यही सेवक दल ऐसा है, कि जो सोशल जीवन के विचार से अपनी खास विशेषता रखता है और भगवान देवात्मा के देव प्रभावों के द्वारा इस अंग में अधिक से अधिक बेहतरी लाभ करने के अनुकूल सामान रखता है। यही सेवक दल हैं, कि जिस में सच्चे आत्म बोधी और सच्चे धर्मवान जनों के उत्पन्न होने की सम्भावना है। और जिन के जीवनों और श्रेष्ट त्यागों के द्वारा क्या हमारी जाति, क्या हमारे देश और क्या मनुष्य मात्र के अधिकारी जनों तक भगवान देवात्मा के महा दुर्लभ देव प्रभाव पहुंचाने का कार्य दिनों

दिन उन्नत होगा, और कसरत से जन विविध पापों और मिथ्या विश्वासों से निकल कर भगवान देवात्मा के सेवक बनेंगे, और इस से भी बढ़कर भगवान के सर्व श्रेष्ट कार्य में सेवाकारी होने का उच्च अधिकार लाभ करेंगे। यही सेवक दल ऐसा है, कि जिस में से समय के साथ-साथ मनुष्य के श्रेष्ट सम्बन्ध स्थापन होंगे, और मनुष्य मात्र के लिए अधिक से अधिक श्रेष्ट बरकतें लाने का हेतु बनेंगे। यही एक दल ऐसा है, जो भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को अधिक से अधिक पाकर इस दुनिया से आत्म अन्ध कार झूठ और पाप के राज्य को नष्ट करने में विशेष रूप से मददगार होगा। यही एक सेवक दल ऐसा है, कि जो इस दुनिया में सच्चा अमन वा शान्ति लाने, सच्ची धर्म शिक्षा फैलाने और सचमुच सचाई और भलाई का स्वर्गीय राज्य वितरण करने का हेतु होगा। यही एक सेवक दल ऐसा है, कि जो सच्चे अर्थों में सच्ची स्वाधीनता लाभ कर सकता है। अर्थात् जो दल भगवान देवात्मा के नेतृत्व में चलता रहकर सब प्रकार के मिथ्या और सब प्रकार के अशुभ से बचे रहने और सब प्रकार की सचाई भलाई का साथ देने में पूरा स्वाधीन है। यही सेवक दल ऐसा है, जो पोलिटीकल लाइन में भी हमारे देश के लिए गैरमामूली तौर पर हितकर प्रमाणित हो सकता है।"

वाह! सेवक दल का उक्त रूप किस कदर सुन्दर, सराहनीय और अति कल्याणकारी!!

फिर अन्त में उक्त माननीय सेवक ने इस सेवक दल के सम्बन्ध में सन्मान् प्रदर्शन करने और अधिक से अधिक सेवाकारी होने आदि के विषय में अपने निम्नलिखित भाव प्रगट किए हैं :-

"तब जो सेवक दल मेरा ऐसा विशेष उपकारी हो, और अपने सद्गुणों के विचार से खास विशेषता रखता है, मैं उसका जिस कदर सच्चा सन्मान् और समादर करूं, उसके लिए जितना सेवाकारी बनूं, मैं उसके सम्बन्ध में जिस कदर पाक वफादारी का परिचय दूं, उतना ही थोड़ा है। मेरी अब यही कामना है, कि मेरे सामने सेवक दल के सच्चे उपकारों की असल हक़ीकत खुलती जा सके। यह सम्बन्ध मेरे लिए जिस कदर कीमती है, मैं उसकी हक़ीकत अधिक से अधिक स्पष्ट रूप से देखने के योग्य बनता जाऊं और इस सम्बन्ध पर मेरी जाति, मेरे देश और मनुष्य मात्र की सच्ची भलाई का जो विशेष रूप से निर्भर है, मेरे सामने उसका दृश्य भी अधिक से अधिक साफ होता जाए। और मैं इस सम्बन्ध को कभी भी साधारण दृष्टि से न देखूं, किन्तु इस सेवक दल में जो जन जिस दर्जे अधिक श्रेष्ठ जीवन रखने वाला है, जिस दर्जे अधिक मेरे लिए रक्षाकारी और कल्याणकारी है, मैं उस की उसी कदर अधिक कदर कर सकूं। और उससे जहां मैं अधिक सहायता पा सकूं, वहां उसके लिए अधिक से अधिक सेवाकारी प्रमाणित हो सकूं।"

प्रिय पाठकगण! हम लोग इस लेख का बार-बार जिस कदर भी विशेष रूप से ध्यान और विचार के साथ पाठ करेंगे, उसी कदर सेवक दल की अथवा इस रूहानी बाग की उसके सच्चे माली भगवान् देवात्मा की सच्ची महिमा और कीमत हमारे सन्मुख प्रगट हो सकेगी, और हम लोग उनके

निकट होने और उनके लिए अधिक से अधिक सेवाकारी बनने में अपने जीवन की रक्षा, उन्नति और सच्ची सफलता बोध करेंगे। सेवक दल के विषय में पाठ विचार के दिनों में यदि हम सेवक दल की महिमा को जान सकें और सच्चे दिल से अपने दुनियावी सम्बन्धियों से कहीं कीमती इस सम्बन्ध को समझ सकें, तो हम एक दूसरे के और निकट हो सकते हैं। कई बार स्वार्थ, गल्तफहमियां और आपसी बातचीत से परहेज़ इस सम्बन्ध को शिथिल कर देता है, उसकी महा हानि व केवल सेवकों को ही नहीं होती, बल्कि समाज को पूजनीय भगवान के कारज को भी होती है, जिसका परिशोध होना ही कठिन है। काश! हम इन दिनों अपनी अपनी ओर ध्यान ले जा सकें। एक ओर अपनी गल्तियों को देख सकें, दूसरी ओर गुणधारी गुरु सेवकों की निकटता प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हों, पूजनीय भगवान वा सहायकारियों की ऐसी सहायता हमें प्राप्त हों।

(एक सेवक)

पेज़ 2 का शेष

आ रही है। तब ऐ नेचर! जिस दशा में मेरा अविर्भाव केवल तुझसे ही है और वह इसलिए है कि तेरे विविध विभागों में मेरे विशेष देवप्रभावों से जहां तक तेरी अपनी विधि से सम्भव है, वहां तक उनमें से जिन-जिन में जहां तक श्रेष्टता आ सकती है, वह श्रेष्टता आवे, तब मेरे इस अविर्भाव का उद्देश्य पूरा हो सकता है, जब समय के साथ-साथ अधिक से अधिक ऐसे अधिकारी अस्तित्व प्राप्त होंगे कि जिनमें मेरे देवप्रभावों से श्रेष्ट परिवर्तन का काम दिनों-दिन अधिक से अधिक उन्नत हो सके या होता जाए। अब यद्यपि यह सत्य है कि न केवल मनुष्य जगत के कितने ही अस्तित्वों में मेरे देव प्रभावों से कई प्रकार का श्रेष्ट परिवर्तन आया है, किन्तु उससे नीचे के जगतों के अस्तित्वों में भी एक या दूसरी श्रेष्टता आई है, परन्तु यह भी सत्य है कि मेरी समाज के बहुत से लोगों में एक सीमा के बाद उनके नीच अनुरागों के कारण उनकी भलाई का रास्ता पूर्णत: बंद है, इसलिए जैसा कि होना चाहिए था, वह पतन की ओर गति कर रहे हैं (फूटकर) तब मैं ऐसी हालत में किस से अपील करू? किससे फरियाद करू? सिवाय तेरे और कोई नहीं। इसलिए इस समय मैं तेरी ही उन शक्तियों को खटखटाता हूं कि जो विकासकारी हैं, जिन तक मेरी ऐसी व्याकुलता के असर पहुंचते और पहुंच सकते हैं। तेरी ही विकासकारी शक्तियां जहां तक तेरी पतनकारी शक्तियों पर जय लाभ करती हैं, वहीं तक भलाई का मार्ग खुलता है और भलाई के लिए अनुकूल हालात पैदा होते हैं। इसलिए व्याकुल होकर बार-बार मैं यह कामना करता हूं कि मेरी इस व्याकुलता की शक्ति के बल के अनुसार मेरे परमलक्ष्य की सिद्धि के ही अनुकूल सामान पैदा हों।

श्रीमान भाई अमर सिंह जी

1– देव समाज के अनोखे सेवक

विशेष श्रद्धा और सम्मान के योग्य श्रीमान भाई अमर सिंह जी भगवान देवात्मा के अनोखे देव समाज के अनोखे सेवक और कर्मचारी थे। ऐसा मालूम होता है, कि नेचर ने अपने निर्माण कार्य के द्वारा श्रीमान भाई जी को मानों पूर्ण रूप से देव समाज की सेवा के लिए ही उत्पन्न किया था। देव समाज के कार्य से बाहर और कोई वस्तु या पदार्थ या कार्य ऐसा नहीं, जो उन को जचता हो। अथवा जिस के लिए श्रीमान भाई जी के विशेष हृदय में कोई थोड़ा सा भी स्थान पाया जाता हो। प्राय: 60 वर्ष के लम्बे काल से भी अधिक वह भगवान देवात्मा के कार्य के लिए पूर्ण रूप से निछावर हुए। लाखों और करोड़ों जन तो साठ वर्ष की आयु तक भी नहीं पहुंचते। साधारण जन तो साठ साल से पहले ही स्थूल देह त्याग कर जाते हैं। कई जन तो साठ साल की उमर में पहुंच कर अपनी डायमंड जुबली मनाते हैं। भगवान देवात्मा के अद्वितीय और महा कठिन कार्य के लिए साठ वर्ष का बहुत लम्बा काल सेवा में व्यतीत करना देव समाज के इतिहास में एक अति विचित्र घटना है। इस पृथ्वी की अन्य समाजों वा सोसाइटियों के त्याग क्षेत्र में साठ वर्ष का इस कदर लम्बा काल शायद ही किसी ने त्याग और वफादारी के साथ व्यतीत किया हो। अब यदि हम अपनी कल्पना शक्ति को काम में लाकर श्रीमान भाई जी के इस कदर लम्बे काल के त्यागों का फोटो खैंच सकें, तो हमें स्पष्ट प्रतीत होगा, कि श्रीमान भाई जी ने अपने व्रत में वफादार रहने के निमित कौन सा त्याग और बहादुरी का हृदय स्पर्शीय दृश्य प्रदर्शन नहीं किया? देव समाज का कौन सा कार्य क्षेत्र है, जिस में उन्होंने पहुंचकर काम नहीं किया, अथवा उस के कार्य में कन्धा नहीं लगाया। यदि वह धर्म प्रचार में लगाए गए, तो बहुत उच्च कोटि के प्रचारक प्रमाणित हुए। यदि देव समाज के मुकदमों में लड़ने के लिए लगाए गए, तो अच्छे पाए के और निहायत ही जफांकश और बहादुर वकील प्रमाणित हुए। बेशक उन्होंने वकालत का इम्तिहान पास नहीं किया था, परन्तु मिसलों के तैयार करने में वह बहुत बड़े मददगार साबत होते रहे हैं। अगर व्याख्यान देने में लगाए गए, तो जिस बहादुरी और सुन्दरता के साथ वह देव समाज की अनोखी धर्म शिक्षा को जनता के सामने पेश करते रहे हैं, उसका उस समय मेरे हृदय पर बहुत गहरा असर हुआ था, जब कि मैंने पहली बार उनके एक व्याख्यान में योग देने का अवसर पाया था। देव समाज की अनोखी धर्म शिक्षा को वह लेखों के द्वारा इस कदर सुन्दरता से पेश कर सकते थे, कि जिस को पढ़कर अधिकारी हृदय उन के सन्मुख झुकने के बिना नहीं रह सकते थे। मुझे याद है, कि सम्भवता 1905 ई० में पूजनीय भगवान की तरफ से आज्ञा हुई थी, कि नाना जन देव समाज की विशेषता पर एक लेख लिखें। मैं उस समय बी. ए. पास कर चुका था। मैंने भी कई और जनों की तरह इस विषय में लेख लिखा था, सब लेखों की तुलना में श्रीमान भाई जी का लेख चुना गया और अच्छा समझा गया। जब देव समाज को एडीटर की जरूरत पड़ी, तब भी देव समाज की नज़र श्रीमान भाई

जी की तरफ गई। वह वर्षों तक एडीटर रहे। सैकड़ों लेख उन्हों ने लिखे। कई स्थूल देह त्यागी कर्मचारियों के जीवन चरित्र श्री भाई जी ने लिखे हैं। दान एकत्र करने के काम में श्री भाई जी ने गज़ब ही ढाया। अपने गाढ़े मित्र और साथी कर्मचारी विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान् भाई मोहन देव जी के साथ उन्हों ने वर्षो तक दान एकत्र करने का काम किया। उन के बीमार होने और गुजरने के बाद मुझे अपने साथ लेकर ..... वर्ष का लम्बा काल बम्बई में दान एकत्र किया। जब देव समाज के प्रति विरोधियों की तरफ से विरोधिता का तूफान पैदा किया गया, तब यह गैर मामूली दिलेर और वफादार सेवक शेर की न्याई खड़े होकर गरजते रहे। और क्या मजाल, कि अपनी जगह से एक इंच भी पीछे हटें। श्रीमान भाई जी पीछे हटना तो जानते ही नहीं थे। हौसला छोड़ देना तो उन के स्वभाव में ही नहीं था। अंग्रेजी कौम के कई बहादुर सुपत्रों की न्याई ज्यों ही विरोधिता को बढ़ता हुआ देखते, त्यों ही उन का हौसला और जोश बढ़ता जाता। शुरू उमर में ही उन की धर्म पत्नी का देहान्त हो गया, उसके बाद उन्हों ने विवाह के बखेड़ों में पड़ना नहीं चाहा क्योंकि वह हमेशा यही चाहते रहे, कि उनके जीवन का हर एक मिन्ट और उन की प्रत्येक शक्ति देव समाज और केवल देव समाज को मुख्य रखकर ही काम आवे। ऐसा मालूम होता है, कि श्रीमान भाई जी ने एक हिन्दु स्त्री की न्याई देव समाज के साथ विवाह सूत्र के द्वारा अपना सम्बन्ध स्थापन कर लिया था। और एक पूर्ण सती स्त्री की तरह अपने आप को देव समाज का ही समझा। इसलिए यदि हम यह कह दें, कि श्रीमान् भाई अमर सिंह जी देव समाज के अनोखे सेवक और कर्मचारी थे, तो हमारा कहना हरफ बहरफ सच होगा, और हरफ बहरफ सच है।

2 – एक उच्च कोटी की हस्ती

अपने कई सद्गुणों और धर्म भावों के विचार से श्रीमान भाई अमर सिंह जी एक बहुत उच्च कोटि की हस्ती थे। श्रीमान भाई अमर सिंह देव समाज स्थापन होने से पहले ही भगवान देवात्मा के श्री चरणों में आ चुके थे। और अपना जीवन उनके चरणों में भेंट कर चुके थे। जिस दिन देव समाज स्थापन हुई, उस स्मरणीय सभा में भी श्री भाई जी वर्तमान थे। उस समय देव समाज बेसरोसामानी की हालत में थी। देव समाज के पास सिर ढकने के लिए भी कोई मकान नहीं था। पैसों के विचार से वह बहुत गरीब थी। सन् ..... ई० में जब कुछ कृतघ्न जनों ने देव समाज से बेवफा बनकर एक बहुत बड़ी सभा में भगवान् देवात्मा के प्रति अश्रद्धा और घृणा फैलाने का काम किया तब भी बहादुर श्री भाई जी उन कृतघ्नों के खिलाफ गुरु के साथ ही रहे। फिर भगवान देवात्मा ने जब उन महा कृतघ्नों के झूठे इलजामों का जवाब देने के लिए देवाश्रम के हाल में सभा की, तब विरोधियों ने अपनी महा नीच प्रकृति का भेद खुलने के भय से सभा में विघ्न उत्पन्न करके उसे होने न दिया। उस समय यह डर था, कि यह दुष्ट जन भगवान देवात्मा की पाक जात पर अपने अपवित्र हाथों से हमला न करें। देव समाज के लिए वह बहुत ही नाजुक समय था। उस समय भी बहादुर श्री भाई जी ने अपने सत्य उपास्य गुरु के सेवक होकर जिस वफादारी और दलेरी का परिचय दिया, यह उन की बहुत उच्च कोटी की हस्ती का एक साक्षात जीवित प्रमाण है। वह ज़माना ऐसा था, कि गिनती के जन भगवान देवात्मा के सेवक थे। बाकी चारों ओर विरोधिता की अग्नि फैली हुई थी। उस नाजुक काल

में कोई माई का लाल ही भगवान् देवात्मा का खुल्लम खुल्ला साथी हो सकता था। श्रीमान भाई अमर सिंह जी उस ज़माने के लाल थे।

फिर एक समय देव समाज के इतिहास में ऐसा आया, कि जब भगवान देवात्मा और श्रीमान भाई अमर सिंह जी के खिलाफ फिरोज़पुर के एक सिक्ख वकील की तरफ से फौज़दारी और दीवानी मुकदमात शुरू हुए। वह मुकदमात क्या थे, क्या देव समाज का पूर्णत: नष्ट करने के लिए चालें थी, और वह वकील खुल्लम खुल्ला कचहरी में कहता था, कि देव धर्म मिशन को गारत करना मेरे जीवन का लक्ष्य है। उस ज़माने में इन मुकदमात के सिलसिले में 'जीवन प्रेस' को बेचना पड़ा, देवाश्रम को किराए पर देना पड़ा और पैसे - पैसे के लिए देव समाज को बहुत बड़ी तंगी में से गुजरना पड़ा। उस संकटमय समय में भी श्री भाई जी ने जिस आत्म त्याग और आत्म समर्पण का गैर मामूली दृश्य दिखाया, वह एक उच्च कोटि की हस्ती ही दिखा सकती थी। एक तरफ देव समाज इस तंग दस्ती में से गुज़र रही थी, और दूसरी तरफ पैसों के सम्बन्ध में हर प्रकार के लालच से ऊपर होकर जिस दयानतदारी का गैर मामूली दृष्टान्त श्री भाई जी ने दिखाया, वह स्मरणीय है। भगवान देवात्मा के दृश्य पर श्री भाई जी के इस गैर मामूली भाव ने इस कदर गहरा असर किया, कि वह अपने पवित्र मुख़ार्बिन्द से कई अवसरों पर यह प्रकाश करते रहे, कि श्रीमान् भाई अमर सिंह जी दयानतदारी के विचार से पूर्ण विश्वास के पात्र हैं। इस पाप भरी दुनिया में दयानतदारी का ऐसा विचित्र दृश्य दिखाना इक बुलन्द पाया की हस्ती के लिए ही सम्भव था। इस के भिन्न कम से कम वेतन लेकर वह हमेशा वह कोशिश करते रहे, कि जिस समय और जब भी समाज की ओर से कभी दान की अपील हो, तब वह सब से पहले दान के लिए तैयार हो जाते रहे एक बार जब यह अपील की गई, कि हर एक सेवक अपनी एक मास की आमदनी देव समाज को दान करेगा, और हर एक कर्मचारी अपना एक मास का वेतन दान देगा, तब श्री भाई जी सब से पहले दान करने के लिए तैयार हो गए।

मैं श्री भाई जी के साथ था, उस समय शायद वह ..... या इससे भी काम माहवार लेते थे। कहा जाता है, कि एक सेवक ने उन को ..... रुपए पकड़ाए, जब श्री भाई जी ने रात को अपना हिसाब मिलाया, तब उस में वह ..... रुपए नहीं थे। उक्त सेवक ने कहा, मैंने आप को ..... दिए हैं। श्री भाई जी का हिसाब भी बताता था, कि उन को रुपए नहीं मिले, फिर भी श्री भाई जी ने उन को चुपचाप .... दे दिए और अपने मासिक में से प्रति मास बराबर देते रहे। यह वह अवसर था, कि जब हम लोग दान के लिए गए हुए थे, और जब कि श्री भाई जी का कोई भी दोष नहीं था, तो भी शक का जुर्माना उन्होंने अपने ऊपर ही रक्खा और शक का फायदा दूसरे को ही दिया। श्री भाई जी की इस घटना ने मेरे दिल पर बहुत गहरा असर किया। वर्षों तक उन्हों ने मेरे साथ दान एकत्र किया और मैंने हैरानी से देखा थे, कि वह कम से कम बोझा देव समाज पर डालते थे, और दान के काम में अपने शरीर से अधिक से अधिक काम लेते रहे। सच बोलने में तो वह गैर मामूली दृष्टान्त दिखलाते। किसी भी सूरत में झूठ बोलना उनको बहुत नागवार था। अगर अपने रिश्तेदारों के विरुद्ध भी सच्ची गवाही देनी हो, तो दे देते थे। एक बार सिन्ध में जो मुकदमें लड़ने पड़े, उन में मैं श्री भाई जी के साथ था। उन मुकदमात के दौरान

में श्री भाई जी ने अपने लगातार बर्तावों से अपने वकीलों पर अच्छी तरह यह सिक्का जमा दिया, कि हम अंश मात्र भी झूठ का साहारा नहीं लेंगे। इसलिए अपने जीवन से उन्हों ने देव समाज की महिमा को इस कदर महान किया, कि जिस का वर्णन नहीं हो सकता। इस लिए मैं उन को एक बहुत बड़ी उच्च कोटी की हस्ती अनुभव करता हूँ।

3 – अनथक काम करने वाले कर्मचारी

श्री भाई जी को मैंने अनथक काम करने वाले कर्मचारी देखा और अनुभव किया है। उन्हों ने अपने शरीर से बहुत अधिक काम लिया। एक बार का ज़िकर है, कि हम दोनों ही नौसारी दान के लिए पहुंचे, हमें पता लगा, कि हमारे मेहरबान जन अपनी ज़मीनों पर कहीं दूर स्थान में गए हुए हैं। हम दोनों ही स्टेशन पर आए और गाड़ी पर सवार होकर एक और स्टेशन पर पहुंचे, जहां से कुछ मील आगे पैदल जाना था। श्री भाई जी चल पड़े, मैं नहीं चाहता था कि इतनी दूर पैदल जाया जाए, क्योंकि मेरे पांव किसी कदर ज़ख्मी हो चुके थे। श्री भाई जी भी थके हुए थे, परन्तु जहां फर्ज़ पूरा करना होता था, उनकी थकावट भाग जाती थी। वह चल पड़े और मुझे भी घसीटते गए। हम दोनों ही थककर और चूर-चूर होकर उस दानी के पास पहुंचे। हमारी ऐसी हालत का उन पर जादू का सा असर हुआ। उन्हों ने हमें अपना नियत चन्दा भी दिया, और शायद .....) उन्हों ने और भी दिए, और अपनी बैल गाड़ी तैयार कराके हमें स्टेशन पर पहुंचाया। यह सच है, कि श्री भाई जी अधिक से अधिक दान एकत्र करना चाहते थे, परन्तु यह नहीं, कि यदि दो घण्टे में दो सौ या चार सौ रुपए मिल जावें; तो बाकी दिन छुट्टी मनाते। छुट्टी मनाना तो वह जानते ही नहीं थे। उन के लिए छुट्टी तो कोई माने ही नहीं रखती थी। बम्बई में साधारणत: शाम के सात बजे तक काम करते रहते थे, और मुझे बार-बार शिक्षा देते थे, कि फल से अधिक कर्तव्य है, कमाई से अधिक फर्ज़ है। दिन जो हमें मिला है, वह इस लिए नहीं, कि हम थोड़े से समय में अच्छा फल देख कर बाकी का समय आराम करें। हमें पूरी दयानत दारी के साथ सारा दिन काम करना चाहिए और अधिक से अधिक फल उत्पन्न करने की भी कोशिश करनी चाहिए। हमें सब से अधिक खुशी इस में हासिल करनी चाहिए, कि हम ने अपने कर्तव्य को पालन किया है और हम ने सारा दिन सफल किया है। इसलिए किसी भी भाव से परिचालित होकर श्री भाई जी अपना कर्तव्य नहीं छोड़ते थे। भाई जी के जीवन की अनेक घटनाएं थी, जो यह बताती थी, कि वह अपने जीवन को सफल करने के लिए अनथक संग्राम करते थे। सोलन में उन पर दस्तों का हमला हुआ, उनकी हालत बहुत नाजुक हो गई। उन को लाहौर पहुंचाया गया और मैंने यह यकीनी समझा, कि अब श्री भाई जी बम्बई दान के लिए नहीं जा सकेंगे। परन्तु मेरी हैरानी की हद न रही, जब श्री भाई जी का पत्र मिला, कि मेरी सेहत का रुख बेहतरी की तरफ है, मैं बम्बई अवश्य चलूंगा। तारीख नियत हुई। मैं और श्रीमती सरस्वती देवी जी सोलन से चले, और श्रीमान भाई जी और श्रीमान भक्त सिंह जी लाहौर से रवाना हुए, हम देहली में इकट्ठे हो गए। श्री भाई जी की सेहत में कोई खास बेहतरी नहीं थी, परन्तु उनका चेहरा दमक रहा था और उनके हृदय में यह भाव कौंधता था, कि मैं बम्बई पहुंच कर देव समाज की जितनी भी सेवा कर सकूंगा, उतना ही मेरे शरीर और आत्मा की सफलता है। बम्बई में हम कुशलपूर्वक

पहुंच गए। वहां जाकर एक समय ऐसा आया, कि श्री भाई जी पर फिर दस्तों का बहुत बड़ा हमला हुआ, मैंने लाहौर में तार भेजा, कि श्री भाई जी की हालत बहुत नाज़ुक है, मुझे मदद की जरूरत है। एक हमदर्द डाक्टर को बुलाकर भी श्री भाई जी को दिखाया गया, उन की दवाई से श्री भाई जी की सेहत में फिर बेहतरी का परिवर्तन शुरू हुआ, चार पांच दिन के बाद मुझे बड़ौदा और नौसारी जाना था। मेरा तो यह फैसला ही था, कि वहां पर मैं अकेला जाऊंगा, परन्तु मेरी हैरानी की हद न रही, कि जब श्री भाई जी ने कहा, कि मैं भी वहाँ चलूँगा। मैंने उन को हटाने की बहुत कोशिश की, परन्तु अपने इरादे में गैर मामूली तौर से पक्के भगवान् देवात्मा के इस वफादार और अनथक कर्मचारी ने एक न सुनी। बहुत मुशकिल था, परन्तु श्री भाई जी मेरे साथ चल पड़े और वहाँ के दौरे को पूरा करके अच्छी तरह वापिस लौटे। इसी प्रकार बहुत मुश्किल से बम्बई का दौरा पूरा करके हम लोग पंजाब में वापिस पहुंच गए। यहाँ पर आकर उन की सेहत एक समय में ऐसी नाज़ुक हो गई, कि उन को डाक्टर की सलाह से हस्पताल में दाखिल करना पड़ा। कई दिन के इलाज और सेवा के बाद वह कुछ बेहतर होकर फिर मन्दिर में आ गए। ऐसी बीमारी और कमज़ोर हालत में आदमी स्वाभाविक यह चाहता है, कि शरीर को आराम मिले। परन्तु श्री भाई जी का बलवान आत्मा उन के शरीर को आराम करने नहीं देता था। वह बहुत कमज़ोर थे, फिर भी देव समाज कौंसल की मीटिंग में सभापति होकर काम कर रहे थे। "सत्य देव सम्वाद" में लेख लिखवाते रहते। विगत देव समाजोत्सव के अवसर पर उन्हों ने एक सभा भी करवाई। इस प्रकार के गैर मामूली भावों को श्री भाई जी के आत्मा में देखकर कईयों के हृदय उन के भी चरणों में झुक जाते थे, और हमें यह प्रतीत होता था, कि भगवान देवात्मा के बल को पाकर श्री भाई जी अनथक संग्राम करने वाले हैं, और जब तक नेचर उन के लिए असम्भव न कर दे, वह भगवान देवात्मा के शुभ कार्य में अपना कन्धा लगाने में ही तृप्ति बोध करते थे। मैं तो कई बार यह अनुभव करता रहा, कि यदि देव समाज एक श्री भाई जी को ही पैदा कर देती, तो भी उस का ऋण परिशोध नहीं हो सकता था। देव समाज के इतिहास में श्री भाई जी की हस्ती विशेष रूप से स्मरण की जावेगी, और हज़ारों और लाखों के दिलों में नई जान फूंक देगी।

4 – अपने जीवन के प्रोग्राम के लिए सच्चे रहने का महा प्रबल भाव

मैंने श्री भाई जी के साथ सन् ..... ई० से काम करना शुरू किया। सिन्ध में जो देव समाज पर कई मुकदमे जारी किए गए थे, उन में मुझे श्री भाई जी के साथ रहने का अधिकार प्राप्त रहा। सन् ..... ई० में श्रीमान मोहन देव जी सख़्त बीमार हो गए, मुझे हुक्म मिला, कि मैं श्री भाई जी के साथ बम्बई जाऊं और वहां जाकर दान एकत्र करूं। इस से पहले मैं औरों के साथ मिलकर दान एकत्र करता था। पहली बार ही सन् ..... ई० में मैंने श्री भाई जी के साथ मिलकर काम किया। सन् ..... ई० में श्रीमान मोहन देव जी बीमारी से निकल आए और वह श्री भाई जी के साथ बम्बई दान के लिए चले गए। मैंने श्रीमान सोनपार जी को साथ लेकर दान एकत्र किया। स०.....ई० की जनवरी में श्रीमान मोहन देव जी परलोक सिधार गए। इस साल से लगातार मैं श्री भाई जी के साथ दान एकत्र करने का काम करता रहा। वह कृपा करके मुझे कराची में अपने साथ ले जाते रहे, और बम्बई में भी मैं उनके

साथ जाता रहा। मैं उन के जीवन के प्रोग्राम को देखकर उन के प्रति श्रद्धा का भाव रखता था। परन्तु इस बीस वर्ष के लम्बे काल में श्री भाई जी ने अपने जीवन के प्रोग्राम को पूरा करने में कभी भी कमी नहीं की। वह चार बजे प्रात: काल उठते हैं और जो साधन विधि उन्होंने अपने जीवन के लिए रक्खी हुई थी, उस को उत्तम रूप से प्रति दिन पूरा करते थे। वह कामना का साधन करते, विचार का साधन करते हैं। फिर एक दो भजन गाते, फिर किसी न किसी पुस्तक का पाठ करते, फिर देव आरती का गान करते, और जय ध्वनि करके अपना साधन समाप्त करते। यह उन का साधन घंटों तक चलता है। सख्त बीमारी के समय वह किसी और को बुलाकर साधन की विधि पूरी कराते थे। यदि खुद देव स्तोत्र नहीं गा सकते, तो किसी और को गाने में लगा लेते। एक साल बम्बई में वह सख्त बीमार हो गए, फिर भी अपना साधन नहीं छोड़ा, न साधन का प्रोग्राम छोड़ा। श्रीमान भक्त सिंह जी बाजे के साथ देव स्तोत्र गाते थे, दो तीन भजनों का गान करते थे और फिर देव आरती गाते थे। यह सब कुछ श्री भाई जी के हृदय की व्याकुलता उन से कराती थी। जब वह उठने बैठने के योग्य नहीं रहते थे। तब वह अपने साधन का प्रोग्राम दूसरों की मदद से पूरा करते रहते। अपने जीवन के इस प्रोग्राम में जहां तक भी मुमकिन हो, उन्हों ने किसी विघ्न को पड़ने नहीं दिया। श्री भाई जी का शुभ कामना में गैर मामूली विश्वास था। इसलिए जब भी हम समाज के काम के लिए कहीं बाहर जाते थे, तो श्री भाई जी जरूर शुभ कामना का साधन करके ही चलते थे। उच्च शक्तियों की सहायता पर उनका पूर्ण विश्वास था, इसलिए अपने हर एक मुश्किल काम में वह उच्च शक्तियों से सहाय प्रार्थना करके तसल्ली पाते रहे हैं। जब हमें किसी मुश्किल काम पर बाहर जाना होता था, तब मुझे यकीन होता था, कि श्री भाई जी सहाय प्रार्थना करके ही चलेंगे। वह कमाल दर्जे के दीन थे, एक-एक बार सहाय प्रार्थना के समय जिस कदर अपनी तुच्छता को देखते, और जिस सरलता से फूट पड़ते, वह दृश्य मुझे कभी भी भूल नहीं सकता। जिस प्रकार एक-एक बच्चा तर आंखों के साथ अपनी नन्हीं-नन्हीं बाहें अपनी मां की तरफ फैला देता है, और यह अनुभव करता है, कि माता की गोद मेरे लिए रक्षा कारी गोद है, ठीक उसी प्रकार वह भगवान देवात्मा और नेचर की अन्य सहायकारी शक्तियों से अपनी तर आंखों के साथ सहायता मांगते थे। और उन का यह पूर्ण विश्वास था, कि मुझे यह सहायता अवश्य मिलेगी और ऐसी अनेक घटनाएं उत्पन्न हो जाती रही हैं कि जिन की हमें पहले कोई उम्मीद नहीं होती थी और जिन घटनाओं के कारण हमें अपने काम में बहुत बड़ी सफलता प्राप्त होती रही। श्रीमान भाई जी यह पूर्ण बोध रखते थे, कि नेचर का निर्माण कार्य सत्य और सार है, और उस के साथ अधिक से अधिक मेल रखना सलामती और उन्नति की दुनियां में पांव रखना है। और उन का यह भी विश्वास था, कि

"सच्चे गुरु का बालका, मरे न मारा जाय।"

पी. वी. कनल

श्रीमती धर्म प्यारी जी

1– श्रीमती धर्म प्यारी जी ने सुयोग्य परन्तु अशान्त हृदय ने क्योंकर शान्ति लाभ की।

श्रीमती धर्म प्यारी जी 21 वर्ष की आयु में विधवा हो गई थी। उनके यहां एक लड़का भी पैदा हुआ, परन्तु शोक! कुछ काल के बाद उसका भी देहान्त हो गया। दुर्घटनाओं के कारण उनका हृदय बहुत गहरी अशान्ति से बेचैन रहता था। वह हरिद्वार जाकर अपने चित्त को शान्त करने के लिए जगह जगह साधुओं की मण्डिलयों में पहुंची और उन्हें अवलोकन किया, परन्तु वहां भी उन की भावना पूरी न हुई। फिर उन्होंने ठाकुरों की चौकी रक्खी जिस पर सालिगराम धरे रहते थे। वह उन की पूजा में लग गई। विष्णु सहत्र नाम का भी पाठ करती रही, मन्दिरों में जाकर प्रणाम करती रही, ठाकुरों का चरणामृत लेती रहीं। यह सब कुछ करने के बावजूद भी वह अपेने पति और बालक के बिछोड़े के कारण दुख के सागर में डूबी रहती थी। घर में रहकर उन को शान्ति नहीं मिलती थी, अपनी देवरानी के साथ प्रति दिन टकराहट में रहती थी। सौभाग्यवश: उन के भाई श्रीमान पण्डित सन्तराम जी भगवान देवात्मा के श्री चरणों में आ चुके थे। उन के द्वारा श्रीमती धर्म प्यारी जी तक भी देवात्मा का शुभ सम्वाद पहुंचा और उन के सुयोग्य हृदय तक उन के देव प्रभाव पहुंचने लगे। देव प्रभावों का उन के हृदय तक पहुंचाना था, कि उन को शान्ति मिलने लगी। फिर उनके हृदय में यह व्याकुलता पैदा हुई, कि वह अपने घर और नगर को छोड़कर ऐसे स्थान में पहुंचे, जहां पर देव प्रभाव दायक मण्डल वर्तमान हो। यह तजबीज़ हुई, कि वह देव समाज बालिका विद्यालय फीरोज़पुर में जाकर रहें। इन्होंने अपने सब ज़ेवर इस भाव से परिचालित होकर बेच दिए, कि वह उनके रुपयों को सूद पर रखकर अपना गुज़ारा करें। यह सब त्याग करके वह बालिका विद्यालय फीरोज़पुर में पहुंची। वह उमर की बड़ी थी, वह 22 वर्ष से ऊपर आयु की थी, फिर भी उन्होंने छोटी छोटी लड़कियों के साथ रहने की झिझक को दूर करके प्रबन्धकारिणी जी की आज्ञा के अधीन रहना स्वीकार किया। यहां पर निवास करने के दिनों में उन के हृदय में कई प्रकार के उच्च भावों ने फूटना आरम्भ किया। उन के हृदय की जलन चली गई, उन के हृदय में बराबर धीरे धीरे अपने कर्तव्यों को देखने और पालन करने की सामर्थ्य बढ़ती गई। प्रबन्धकारिणी जी उनके इन सुन्दर भावों को देखकर बहुत प्रसन्न रहती थी। लड़कियां भी उन के अच्छे बर्ताव से खुश थी। पढ़ाई में भी वह उन्नति करने लगी, परन्तु उन के हृदय में जो प्रबल धुन रहती थी, वह यह कि अब धर्म जीवन को ही पाना है, और औरों में धर्म जीवन का प्रचार करना है। इस का फल यह हुआ, कि उन्होंने पढ़ाई छोड़कर धर्म लाभ करने के सच्चे साधनों में प्रवृत होने का फैसला किया।

वह पहली फरवरी सन् ..... ई० में भगवान् देवात्मा की सेवकी में दीक्षित हुई। भगवान् देवात्मा की सेवकी में उनका दीक्षित होना ही था, कि वह निज के धर्म साधनों में लग गई। उन्होंने सत्संगों में जाना और उच्च भावों को लाभ करना शुरू किया और दिसम्बर सन् ..... ई० में यह भगवान् देवात्मा के जुबिली महोत्सव पर अपने जीवन को भेंट करके देव समाज की कर्मचारिणी बन गई। हमारे सैकड़ों साथी सेवक अपने- अपने जीवन के अध्ययन से श्रीमती धर्म प्यारी जी के विशेष हृदय के दर्शन कर

सकते हैं, और उन के जीवन का दर्शन करके उनकी धार्मिक अवस्था का अनुमान कर सकते हैं। उन की आयु बहुत छोटी थी, जबकि वह कर्मचारिणी बन गई। पांच वर्ष के बहुत थोड़े काल में कर्मचारी के पद पर पहुंचना उनके हृदय की विशेषता को प्रगट करता है।

2 – भगवान देवात्मा के कार्य का एक बहादुर सिपाही

श्रीमती धर्म प्यारी जी ने अपने जीवन से यह प्रमाणित किया, कि वह भगवान देवात्मा के कार्य के लिए एक बहादुर और वफादार सिपाही थी। उनको समाज की ओर से जहां भी जाने की आज्ञा मिलती थी, वह झट तैयार होकर वहां पहुंच जाती थी। उन्होंने देव समाज के विविध कार्यक्षेत्रों में जाकर बहुत प्रशंसनीय काम किया है। जब देव समाज चौधरी कन्या पाठशाला चक्क खड़क सिंह वाला में खोली गई, तब इस बहादुर सिपाही को वहां काम करने के लिए भेजा गया। फिर जब यह स्कूल पूहला में तबदील किया गया, तब उस ने चलाने के लिए भी उनको ही रक्खा गया। श्रीमती जी का धर्मवान और बहादुर हृदय केवल स्कूल की चार दीवारी में ही काम करके सन्तुष्ट नहीं रहा, बल्कि उन्होंने चारों ओर के गांवों में जा जा कर भी धर्म प्रचार करना आरम्भ किया। पूहला के बाद श्रीमती जी को फीरोज़पुर बालिका विद्यालय में काम करने की आज्ञा मिली, वह तत्काल ही तैयार हो गई। वह सच्चे सिपाही की तरह कर्तव्य पालन के लिए आसानी से सब कुछ त्याग कर देती थी। फिरोज़पुर बालिका विद्यालय में काम करने के लिए वह वहां पर प्रबन्धकारिणी बनाई गई। वहा पर भी उन्हों ने डट कर काम किया। उनके ऊपर दो सौ के लगभग लड़कियों की रक्षा, शिक्षा और पालना का भार था। उनके जीवन के उच्च प्रभाव लड़कियों पर खास तौर पर पड़ते थे। लड़कियों के सम्बन्ध में वह सच्ची माता का स्नेह प्रकाश करती थी। देव समाज को यह जरूरत हुई, कि पलवल में लड़कियों का एक नया स्कूल खोला जाए। और उस के प्रबन्ध के लिए एक ऐसी योग्य स्त्री को भेजा जाए, कि जो न केवल स्कूल को कामयाब बना दे, किन्तु वहां पर धर्म प्रचार का एक नया सैंटर भी खोल दे। इस मुशकिल काम के लिए फिर भी इसी बहादुर देवी पर समाज की नज़र पड़ी और उन को यह आज्ञा मिली, कि तुम पलवल में जाकर कन्याओं का नया स्कूल खोलो और सत्य धर्म का प्रचार भी करो। क्या मजाल कि वफादार और बहादुर सिपाही को हुकम मिले और वह जंग के मैदान में छलांग न मारे। श्रीमती जी वहां पर पहुंची और उन्होंने स्कूल खोला। उस को चलाया और स्त्री पुरुषों में सत्य धर्म का प्रचार आरम्भ किया।

उनके बाद देव समाज ने बधनी कलां में लड़कियों का नया स्कूल खोलने की तजवीज़ की, जिस पर श्रीमती धर्म प्यारी जी को पलवल से बधनी जाकर स्कूल खोलने की आज्ञा मिली, वहां जाकर इस सुयोग्य कर्मचारिणी ने न केवल स्कूल खोला और चलाया, बल्कि वहां पर कई स्त्री पुरुषों की सभाएं कराती रहीं और वह क्या स्त्रियां को और क्या पुरुषों का अपने अधीन चलाने की खास सामर्थ्य रखती थी।

फिरोज़पुर बालिका विद्यालय के कर्ताओं ने भगवान् देवात्मा की सेवा में बार बार यह प्रार्थना करनी शुरू कीं, कि श्रीमती धर्म प्यारी जी के चले जाने से उनके बालिका विद्यालय की बहुत बड़ी हानि हुई है। इसलिए श्रीमती जी को फिर वापिस फिरोज़पुर में भेजा जावे। उनके दोबारा वहां जाने से देव समाज गर्ल्ज़ हाई स्कूल के बोर्डिंग में नई जान पड़ गई। उन्होंने बोर्डिंग की कितनी ही बड़ी बड़ी कन्याओं के भीतर भगवान् देवात्मा के प्रति अच्छी श्रद्धा उत्पन्न कर दी, कई लड़कियां उन के यत्न से भगवान देवात्मा की सेवका बन गई और बोर्डिंग की लड़कियां श्रीमती जी के साथ

इस कदर स्नेह भाव से जुड़ी हुई थी, कि श्रीमती जी की आज्ञा को प्रसन्नता पूर्वक मानती थी। फिरोज़पुर में रहने के दिनों में वह घरों में जाकर भी धर्म प्रचार का काम करती थी और उनके बहुत बड़े संग्राम से कई स्त्रियों ने नाना प्रकार की कुरीतियों और कुसंस्कारों आदि से उद्धार लाभ किया। कई स्त्रियों ने अपने पतियों से लड़ाई झगड़ा करना छोड़ दिया। उन के इस प्रशंसनीय संग्राम से देव समाज की महिमा जगह जगह फैलने लगी, और जगह जगह पर इस वफादार बहादुर और काबिल कर्मचारिणी ने अपनी हितकारी समाज और परम हितकर्ता के नाम को रौशन कर दिया।

3 – विरोधिता का बहादुरी से मुकाबिला करने का प्रबल भाव

एक बार श्रीमती धर्म प्यारी जी सक्खर में गई थी, मैं उन दिनों में सक्खर में काम करता था। उस समय सक्खर ने अन्दर देव समाज के सम्बन्ध में विरोधिता के बादल गरज रहे थे। जगह जगह - जगह ईश्वर के पुजारी लोग जत्थे बना कर हमारी विरोधिता कर रहे थे। श्रीमती धर्म प्यारी जी एक सत्संग पार्टी के साथ वहां पहुंची, वहां पहुंचकर उन्हों ने सभाएं करानी आरम्भ कीं, और थोड़े ही दिनों में सेवक सेविकाओं में इस कदर जान फूंक दी, कि माना उन्हें गीदड़ से शेर बना दिया। मेरे दिल पर उन के इस निडर स्वभाव का बहुत गहरा असर हुआ। वह भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में श्रद्धा और आकर्षण के भाव प्रबल रूप में रखती थी, इसलिए वह अपने आप को निर्भय अनुभव करती थी। एक बार की घटना है, कि वह अकेली लाहौर जा रही थी। लाहौर के स्टेशन से उतर कर वह एक टांगे में सवार हो गई, इस टांगे में और भी तीन जन सवार थे एक जन ने भगवान देवात्मा के सम्बन्ध कुछ अपमान सूचक शब्द उच्चारण किए, श्रीमती जी ने उन को ललकार कर कहा, कि खबरदार यदि तुम ने मेरे गुरु के विरुद्ध कोई भी अनुचित बात की, तो तुम्हारे लिए अच्छा न होगा। वह जन उन के ऐसे गम्भीर शब्दों को सुनकर चुप हो गया।

एक बार श्रीमती धर्म प्यारी जी एक सेविका को साथ लेकर रावलपिंडी और कोहमरी आदि की ओर दान एकत्र करने के लिए गई। रावलपिंडी में काम करके उन्होंने कोहमरी में काम लिया। कोहमरी में काम करने के बाद उनका प्रोग्राम पिशावर पहुंचने का नियत हो चुका था, रवानगी के दिन मूमलाधार वर्षा हो रही थी। श्रीमती धर्म प्यारी जी ने रवाना होने की तैयारी कर ली। श्रद्धा के योग्य श्रीमान दीनानाथ बाली जी ने श्रीमती धर्म प्यारी जी को कहा, कि श्रीमती जी! इस कदर ज़ोरदार वर्षा में आप कैसे जा सकेंगी? श्रीमती जी ने उत्तर दिया कि हमारा प्रोग्राम बन चुका है, हम ने कल को अवश्य पिशावर पहुंचना है, हम ने आज ज़रूर रवाना होना है, चाहे मौसम कितना भी विरोधी क्यों न हो। श्रीमती जी अपने इरादे की पक्की वहां से चल ही पड़ी, और अजीब इतफाक हुआ, कि अड्डे में पहुंचने तक वर्षा बन्द हो गई और श्रीमती जी अपने काम पर रवाना हो गई।

4 – भगवान देवात्मा के महान कार्य के लिए अपनी जान पर खेलने वाली बहादुर सेविका

अपने सत्गुरु भगवान देवात्मा के कार्य के लिए श्रीमती धर्म प्यारी जी के भीतर इस कदर प्यार उत्पन्न हो चुका था, और उनके देवरूप के प्रति इस कदर आकर्षण वर्तमान था, कि वह कोई ऐसी कुर्बानी करने से जी नहीं चुराती थी, कि जो कुर्बानी भगवान देवात्मा या, उन के कार्य के लिए जरूरी हो। जब सोलन में पर्वताश्रम बनाने की तजवीज़ थी, तब इस वफादार और गुरु सेवा के लिए कुर्बान होने वाली गुरु की सच्ची सेविका ने एक पत्र अपने गुरु की सेवा में भेजा, कि उन के पास जो रुपए हैं, वह सब के सब

इस आश्रम के बनाने में खर्च किए जावें। भगवान देवात्मा ने उनके अच्छे भावों की दाद देते हुए कुछ रुपए स्वीकार किए। फिर इन्होंने इन रुपयों के सम्बन्ध में जो वसीयत की थी उस में उन्हों ने यह साफ लिखा था, कि उन के मरने के बाद यह सब के सब रुपए देव समाज के धर्म कार्य में काम आएंगे। उनके जीवन की कई घटनाएं हैं, कि जब कोई हितकर या सुन्दर वस्तु वह देखती थी, और यह अनुमान करती थी, कि वह चीज़ भगवान् देवात्मा के भेंट करने के योग्य हैं, तब उस को तत्काल खरीद लेती थी, या खुद बनाकर तैयार कर लेती थी, और उस को अपनी ओर से गुरु की सेवा में खुद ले जातीं, या किसी और के द्वारा पहुंचा देती थी। कई बार सुन्दर फूलदार और फलदार पौदे अपने गुरु देवात्मा की पुष्पवाटिका में लगाए जाने के लिए अपने आप ले जाती थी। भगवान देवात्मा के खाने के लिए दाल आदि अपने हाथों से चुनकर और साफ करके उन की रसोई में भेजती थी। इस के भिन्न भगवान देवात्मा के अद्वितीय धर्म कार्य में काम आने के लिए तन मन से लगी रहती थी। आखिरकार उन्हों ने अपने प्यारे गुरु भगवान देवात्मा के कार्य को करते करते ही उनकी कुर्बानगाह में अपने प्राण त्याग किए। एक बार पंजाब के अन्दर जंगी बुखार फूट पड़ा। इस बुखार से सारे भारत वर्ष में बहुत बड़ी तबाही आई थी, उन दिनों श्रीमती धर्म प्यारी जी लाहौर में भगवान देवात्मा के दर्शन के लिए पहुंची हुई थी, वहां पर उन्हें ज्यों ही पता लगा, कि बालिका विद्यालय फिरोज़पुर में बहुत सी लड़कियां जंगी बुखार से बीमार हो गई हैं, त्यों ही उन की सेवा और सहायता के लिए उन का हृदय उछल पड़, और वह भगवान देवात्मा की आज्ञा लेकर फिरोज़पुर में पहुंच गई। और बीमार कन्याओं की दिली जोश के साथ सेवा करने लगी। अत्यन्त शोक! कि इन कन्याओं की सेवा करते करते वह खुद भी इस बुखार से बीमार हो गई और बीमार होते ही बुखार ने इतना जोर पकड़ा गया, कि वह चारपाई पर पड़ गई, जहां से फिर कभी न उठी। भगवान देवात्मा का परम दयालु हृदय अपनी ऐसी वफादार सेविका के बहुत सख्त बीमार होने पर इस कदर ज़ोर से हिला, कि उन्होंने दो कर्मचारी और एक सेविका और एक बहुत मशहूर डाक्टर को फिरोज़पुर में उन की मदद के लिए भेजा। और यह फरमाया, कि जो कुछ भी हो सकता है, वह किया जावे और जो कुछ खर्च करना पड़े खर्च किया जावे और उस में कोई कमी न की जावे। परम दयालु भगवान देवात्मा ने अपने पवित्र हाथों से श्रीमती धर्म प्यारी जी को एक पत्र लिखकर भी भेजा, परन्तु शोक! सारा परिश्रम निष्फल गया और उन्होंने अपने स्थूल शरीर को त्याग दिया। बेशक श्रीमती धर्म प्यारी जी अपनी भरी जवानी में मृत्यु को प्राप्त हुई, बहुत छोटी उमर में वह भगवान देवात्मा की शरण में आई थी। सेविका होने के बाद जितने वर्ष इस पृथ्वी पर जीती रही, इन वर्षों में भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर उन्हों ने जिस कदर अपने जीवन में उन्नति लाभ की, वह उन के हृदय की विशेषता को प्रगट करती है और उनका त्याग अर्थात् उन्होंने प्राण त्याग का जो दृष्टांत अपने देवात्मा गुरु के अद्वितीय मिशन के लिए प्रगट किया; वह त्याग का दृष्टांत हजारों और लाखों अधिकारी हृदयों को उभारने का काम देगा। जो श्रीमती जी विधवा पुत्रहीन होकर निराशा के भंवर में डुबकियां ले रही थी, वह अपने महाबली सत्य देव के देव प्रभावों को पाकर आशा और उत्साह से भरने वाली बन गई और जो उनके जीवन चरित्र को पढ़ेंगे, वह अवश्य आशा और कुर्बानी के भावों से भर जाएंगे।



शुभ संग्राम

सरसा, 5 – 4 – 2009 :– इस सभा में बताया गया कि गुरु महाराज की सारी शिक्षा नियमों पर आधारित है। नेचर के नियम विश्व व्यापी हैं। प्रत्येक अस्तित्व परिवर्तन के आधीन हैं। परिवर्तन के नियम हैं। हमारे शरीर, दिमाग और विशेष रूप से हमारे स्वभाव बदल रहे है। समाज से जुड़कर मनुष्य के स्वभाव में उच्च परिवर्तन आता है, उच्च बरकतें प्राप्त होती हैं। मनुष्य संगत से उदासीन हो बुरा परिवर्तन प्राप्त करता है। कोई चुस्ती, चालाकी इसमें काम नहीं आती। संगत का मोल पाना चाहिए। कई जनों ने अपनी अच्छी तबदीली को अनुभव किया।

रात को फिर सभा की गई। इसमें बताया गया कि धर्म सम्बन्धों में है परन्तु सम्बन्धों में नर्क है। देवात्मा इस नर्क को स्वर्ग में बदलने की क्षमता रखते हैं। इसके उदाहरण पेश किए गए। सभापति जी ने दिल को छूने वाले शब्दों में अपना परिवर्तन पेश किया, जिससे सबके दिल गुरु के आगे झुक रहे थे।

6 – 4 – 2009 यह इस दौरे की आखरी सभा थी। इसमें बताया गया कि संसारिक प्रलोभन मनुष्य के धर्म मार्ग में बाधक हैं। मनुष्य को सेहत, धन, विद्या और सम्बन्धों की जरूरत तो है, परन्तु यह उनका लक्ष्य नहीं है। लक्ष्य धर्म जीवन, विशुद्ध सेवा और परोपकार है। इससे परलोक में कभी पछताना नहीं पड़ेगा। भगत पूर्ण सिंह जी, श्रीमान ईश्वर सिंह जी, डॉ. मथरा दास जी, लाला लाजपतराए जैसे परोपकारियों के उदाहरण दिए गए। बारिश से विघ्न के बावजूद प्रबन्ध ठीक रहा है। हरदेव सिंह जी ने तीन बार संगत को बेर खिलाए 1610 रु० दान प्राप्त हुए। श्रीमान माहना सिंह जी को श्रीमान जी मिले, उनकी सेहत का पता किया।

डबवाली :– श्रीमान बलदेव सिंह जी मलेका से डबवाली पहुंचे। सभा के लिए बताया गया और रात को 8.00 बजे सभा रखी गई। सभा में बताया गया कि धर्मों में मिथ्या भरी हुई है। असम्भव बातों को मानकर मनुष्य हानि उठा रहे हैं। नेचर के नियम हैं। जैसे विद्या प्राप्ति वा सेहत प्राप्ति के नियम हैं, उसी प्रकार धर्म प्राप्ति के भी नियम हैं। पहले नीच जीवन अर्थात् कम से कम 8 पाप त्यागने पड़ेंगे। पाप जीवन और धर्म जीवन इकट्ठे नहीं रह सकते। गुरु महाराज पापों और मिथ्याओं से बचाते हैं इस प्रकार वह मनुष्यों को धर्म जीवन में ढालते हैं।

7.4.2009 सुबह की सभा में बताया गया कि जो हृदय बड़ो का महान रूप देखकर झुकता है, प्रणाम करता है, उसे धर्म जीवन प्राप्त होता है नाम जपने से मिथ्या विश्वासों की तृप्ति होती है, परन्तु धर्म की A.B.C. भी नहीं आती। बड़ों के आगे झुकने से अपना आप छोटा वा, अदना दिखाई देता है, तो ही मत्था टेकना लाभकारी है। नहीं तो बन्दर समान है। सभा में आपस में बातचीत भी हुई। एक

स्त्री ने भरे दिल से कहा कि मेरे माता पिता ने जो कुछ भी किया है, वह मैं कैसे भूल सकती हूं। उस बीबी ने अपने घर सभा करवाने के लिए भी कहा, पर समय न होने से नहीं हो सकी और श्रीमान जी थराजवाला को चल पड़े।

थराजवाला :– यहां शाम को 4.00 बजे सभा रखी गई। सभा में मिथ्या का भयानक वा हानिकारक रूप पेश किया गया। मिथ्या कैसे सत्य पर पर्दा जल देती है और हानि करती है। वहां के जनों का उत्साह देखकर अगले दिन फिर सभा रखी गई।

8.4.2009 इस सभा में बताया गया कि मनुष्य अपनी हस्ती के भले बुरे की ओर से बेसुध है। उसके संस्कार, उसकी संगत, उसके विश्वास उसे बेसुध बनाए रखते हैं। गुरु महाराज की संगत मनुष्य के सर्वपक्षिय भले के लिए जान प्राण की चीज़ है। जैसे फसल के लिए पानी है, वैसे ही आत्मा के भले के लिए देव प्रभाव हैं। देव प्रभावों में बैठकर योग्यतानुसार अवश्य लाभ होता है। ऐसे प्रभाव पाने के लिए उपस्थित जनों ने बार बार अपने को कहा और जन ने 5.00 रू० दान में दिए।

24 अप्रैल डबवाली :– चण्डीगढ़ से श्रीमान बलदेव सिंह जी और जगदीश जी रवाना होकर संगरूर से श्रीमान सीता राम जी और भुच्चो मण्डी से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी को लेकर, देवधर्म मन्दिर डबवाली पहुंचे। श्रीमान स्वरुप जी वशिष्ट के देहान्त के कारण उनके बेटे विक्की और उनकी माता कमलेश जी वहां पहुंचे हुए थे। शोक प्रगट करने के लिए उनके भाई केशव जी के घर सारी पार्टी पहुँची। सारे परिवारिक जनों को मिलकर उनके दुख में शमिल हुए। घण्टा भर वहां समय लगाकर और कई जरूरी काम करके सब वापिस आ गए और श्रीमान बलदेव सिंह थराजवाला पहुंच गए।

थराजवाला :– वहां कुछ नौजवानों के साथ हितकर बातचीत करके उन्हें बताया गया कि देव धर्म की संगत के बिना किस प्रकार मनुष्य बर्बाद हो जाते हैं। संगत से जुड़े रहने की प्रेरणा की।

गंगानगर :– श्रीमान बलदेव सिंह जी दोपहर तक यहां पहुंचे। डॉ. मनसा सिंह जी स्वागत के लिए पहुंचे हुए थे। सब देव धर्म के साधन स्थान N Block में पहुंचे और रात को 8.30 बजे सभा रखी गई। सभा में बताया गया कि दुनियां में पूजा पाठ की कमी नहीं फिर भी मिथ्या और पाप बढ़ते जा रहे हैं। नमाज़ें पढ़ी जा रही हैं, जगराते हो रहे हैं परन्तु मनुष्य नीच से नीच बन रहा है। नीचता की बहुत सी घटनाएं पेश की गई। फिर गुरु महाराज के अद्वितीय कारज को बताया गया कि किस प्रकार वह पाप और मिथ्या को नष्ट कर रहे हैं 26 अप्रैल सुबह फिर सभा की गई। इसमें बताया गया कि मनुष्य अपने आन्तरिक रूप को देखने के अयोग्य है। अपना भला और बुरा नहीं देख सकता। वह कई पक्षों में अन्धेरे में है। गुरू महाराज मनुष्य का असली रूप दिखाते हैं। पाप जीवन से निकालकर मनुष्यों में उच्च परिवर्तन पैदा करते हैं। इस सभा में कुछ नये जन थे जो बहुत प्रभावित हुए। सभा के बाद भी बातचीत होती रही।

रात 8.30 बजे एक और सभा की गई।

इस सभा में बताया गया कि मनुष्य ब्रह्म का अंश नहीं, वह नीच सुखों का गुलाम, पाप परायण और हानिकारक जीवन है, इसीलिए दुनियां दुखों का घर बनी हुई है। कोई पूजा पाठ काम नहीं आते। परम पूजनीय भगवान देवात्मा मनुष्य के पापी और नीच रूप को दिखाते हैं और उनसे बचा कर उच्च भाव पैदा करके मनुष्य को स्वर्गीय जीव बनाते है। इसके सुन्दर उदाहरण पेश किए गए। नये जनों ने बहुत लाभ उठाया।

27 अप्रैल की सभा में बताया गया धर्म उच्च भावों से आता है। परहित भाव से विषय में बताया गया और शुक्रगुजारी के भाव की व्याख्या की गई। गुरु महाराज नशुक्रे जनों को शुक्रगुजार बनाते हैं, इसके उदाहरण दिए गए। यहां पर सभाओं का प्रोग्राम सफल रहा। कुछ नये जनों तक भी पूजनीय भगवान का सन्देश पहुंचा। दोपहर तक श्रीमान जी यहां से पदमपुर पहुंचे।

पदमपुर :- यहां 27 अप्रैल की रात को सभा की गई। सभा में धर्म क्या है, इसकी क्या अवश्यकता है? बताया गया कि शिक्षा, दवाई की तरह धर्म की शिक्षा भिन्न-भिन्न नहीं बल्कि एक ही है। धर्म उच्च भावों से पैदा होता है। "परहित भाव हृदय उपजाओ, धर्म मार्ग की दिग तब जाओ।"

28 अप्रैल की सभा में मनुष्य के प्रकृतिक रूप को बताया गया कि मनुष्य प्रकृति नीच अनुरागी है, इसलिए पाप वा मिथ्या स्वरूप है। मनुष्य के दुखों का ईलाज जाप या पाठ में नहीं, मनुष्य की नीच लालसाओं और उनके द्वारा उपजे दुखों से मुक्त होने के लिए पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों की अवश्यकता है। सभा अच्छी प्रभावशाली थी।

28 अप्रैल रात की सभा में बताया गया कि मनुष्य जो कुछ भी करता है, वह अच्छा काम करके भी नीच गति ही कर जाता। इसको विस्तार से बताया गया कि उच्च गति क्या है, नीच गति क्या है, पुण्य क्या है और पाप क्या है। उच्च भावों के बिना उच्च गति नहीं होती।

28 अप्रैल यहां आखिरी सभा थी, इसमें बताया गया कि जो किसी और के लिए काम आता है, उसका विकास होता है, उसकी रक्षा होती है। दूसरों के काम आना अपना भला करना है।

गर्मी बहुत बढ़ गई थी वहां से श्रीमान बलदेव सिंह जी और डाक्टर मनसा सिंह जी चण्डीगढ़ को रवाना हो गए।

एक सेवक

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

WPP - Regd. CHD. 0077/09-011 **Published on 5th of the month**
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88 20 जुलाई - अगस्त 2009

सत्य धर्म बोध उत्सव

आपको यह जानकर खुशी होगी कि सत्य धर्म बोध उत्सव 28 अगस्त से 30 अगस्त 2009 तक धर्मशाला सैक्टर 18-डी, चण्डीगढ़ में चाव भाव से मनाया जा रहा है। इस मुबारक उत्सव से पहले चन्द दिन का खास सत्संग रखा जा रहा है। 28 अगस्त की शाम 5.00 बजे सत्य धर्म बोध उत्सव की प्रवेश सभा होगी।

आपकी सेवा में विनम्र प्रार्थना है कि आप न केवल स्वयं इस शुभ अवसर से लाभ उठावें बल्कि और अधिकारी आत्माओं को भी साथ लावें।

प्रोग्राम

28 अगस्त शुक्रवार

प्रवेश सभा : 5:00 बजे शाम
विषय : सत्य धर्म की विशेषता।
सभा से लाभ उठाने की जरूरी शर्तें।
अगले दिन के प्रोग्रामों की सूचना।

29 अगस्त शनिवार

पहली सभा : 8.00 बजे सुबह
विषय : आत्म अबोधता की हानियां और आत्म बोध के लाभ।
दूसरी सभा : 10:00 बजे
विषय : स्वास्तित्व सम्बंधी आदेशों का पाठ और व्याख्या।
तीसरी सभा : 5.00 बजे
विषय : भगवान देवात्मा के प्रभावों का अद्वितीय कारज।

30 अगस्त इतवार

पहली सभा : 8.00 बजे सुबह
विषय : भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्रदान करने का अनोखा कारज, इस सम्बंधी हमारी जिम्मेवारियां। इस कारज के लिए धन और जन की अपील।
दूसरी सभा : 10.00 बजे
विषय : सभाओं से उठाए लाभ का यात्रियों की ओर से वर्णन।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए., (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160036*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts